अमृत वाणी

गरीबों के समान विनम्र अमीर और अमीरों के समान उदार गरीब, ईश्वर के प्रिय पात्र होते हैं।

-शेख सादी,

करनी की उचित सजा

जम्मू कश्मीर के कठुआमें गत वर्ष आठ साल की बच्ची के साथ सामूहिक दुष्कर्म पश्चात उसकी निर्मम हत्या के तीन दोषियों को अदालत ने आजीवन कारावास एवं एक-एक लाख रूपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। वहीं इस मामले में सबूतों से छेड़छाड़ के दोषी पाए गए तीन पुलिस कर्मियों को 5-5 वर्ष की कैद और 50-50 हजार रूपये जुर्माने का दंड दिया गया है।

वैसे तो इस प्रकार के अमानवीय कुकृत्य के दोषियों के लिए कोई भी सजा कम ही प्रतीत होती है फिर भी अदालत ने उनके कर्मो का जो फल उन्हें नसीब कराया है उससे कम से कम जीवन भर सलाखों के पीछे रहते हुए पल पल वे अपने कर्म पर पश्चाताप तो कर ही सकेंगे। अपनी बेटी समान बच्ची के साथ ऐसा क्रूर और जघन्य व्यवहार करते समय अगर उनका सुप्त विवेक आड़े न आ पाया हो तो कम से कम अब तो पश्चाताप में सिर ठोक सकते हैं।

सबसे ज्यादा घृणा होती है उन पुलिस कर्मियों के आचरण पर। अपराधी तो अपराधी होते है लेकिन कानून के रक्षक का चोला पहनने वाले ये पुलिस कर्मी इन अपराधियों के साथ मिलकर अपने दायित्वों और कर्तव्यों की तिलांजलि कैसे दे सकते हैं। अगर अपराध सहने वाला व्यक्ति भी दोषी माना जाता है तो अपराधियों का साथ देने वाला व्यक्ति तो उससे भी बड़ा अपराधी माना जाना चाहिए। उस परिपेक्ष्य में उनकी कारावास की सजा दिखने में भले ही कम दिखे परंतु उसके दूरगामी प्रभावों की भारी कीमत चुकाते हुए उन्हें अपनी करनी पर आंसू तो अवश्य बहानी होगी। यही नहीं, अदालत ने 50-50 हजार का जुर्माना मढ़कर उन्हें उनके लालच की उचित सजा भी दे दी है।

हैरत होती है यह सोचकर कि एक मासूम निस्सहाय बालिका के साथ इतना जघन्य और क्रूर अपराध करने वालों का साथ देने में उनका मन कैसे माना। कल के दिन अगर उनकी बहन या बेटी के साथ ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाय तो उन्हें कैसा महसूस होगा।

दुष्कृत्य, हत्या जैसे अपराध करने वाले तो इन्सान नहीं बल्कि हैवान होते है क्योंकि उनके कृत्य मानवीयता शर्मसार होती है मगर सबकुछ जानते देखते हुए भी कोई अगर उनका साथ दे तो उन्हें क्या कहा जाना चाहिए। इतना ही नहीं पुलिस कर्मी समाज के रक्षक माने जाते है। जन सेवा की शपथ लेकर वे वर्दी धारण करते हैं। उसके बाद भी अगर गलत गतिविधियों में लिप्त होते हैं अथवा उनका साथ देते हैं तो उन्हें दंड ही नहीं बल्कि उनका सामाजिक बहिष्कार भी किया जाना चाहिए।

भारत-पाक दोस्ती के सच्चे हिमायती थे मेहंदी हसन

आज पुण्य तिथी पर विशेष

मौहब्बत करने वाले कम न होंगे, तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे। मेहंदी हसन की गायी यह प्रसिद्व गजल आज यथार्थ बन गयी हैं। 13 जून 2012 को पाकिस्तान के कराची शहर में पूरी दुनियां में अपने चाहने वालों को बिलखता छोड़ मेंहदी हसन इस दुनिया से दूर जा चुके हैं। अब हमें याद रहेंगी तो बस उनकी गायी अमर गजलें व उनकी यादें। उनकी गजलें और हमारे जज्बात आपस में बातें करते हैं। इतनी नजदीकियां शायद हम किसी से ख्वाबों में सोचा करते हैं। उनकी मखमली आवाज के दरमियां जब अल्फाज मौसिकी का दामन पकड़ती है,तब हम खुदाओं से बड़ी सैर करते हैं।

पाकिस्तानी गजल गायक मेहंदी हसन का भारत से विशेष लगाव रहा था। उन्हे जब भी भारत आने का मौका मिला वे दौड़े चले आते थे। राजस्थान में शेखावाटी की धरती उन्हें अपनी ओर खींचती रही थी। यहां की मिट्टी से उन्हे सैदव एक विशेष प्रकार का लगाव रहा था इसी कारण पाकिस्तान में आज भी मेहंदी हसन के परिवार में सब लोग शेखावाटी की मारवाड़ी भाषा में बातचीत करतें हैं। मेहंदी हसन ने सदैव भारत.पाकिस्तान के मध्य एक सांस्कृतिक दूत की भूमिका निभाई तथा जब.जब उन्होने भारत की यात्रा की तब.तब भारत.पाकिस्तान के मध्य तनाव कम हुआ व सौहार्द का वातावरण बना।

मेहंदी हसन का जन्म 18 जुलाई 1927 को राजस्थान में झुंझुनू जिले के लूणा गांव में अजीम खां मिरासी के घर हुआ था। भारत.पाकिस्तान के बंटवारे के वक्त पाकिस्तान जाने से पहले उनके बचपन के 20 वर्ष गांव में ही बीते थे। मेहंदी हसन को गायन विरासत में मिला। उनके दादा इमाम खान बड़े कलाकार थे जो उस वक्त मंडावा व लखनऊ के राज दरबार में गंधार, ध्रुपद गाते थे। मेहंदी हसन के पिता अजीम खान भी अच्छे कलाकार थे। इस कारण उस वक्त भी उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी थी।

मेहंदी हसन कहते थे कि बुलबुल ने गुल से, गुल ने बहारों से कह दिया, एक चौदहवीं के चांद ने तारों से कह दिया, दुनिया किसी के प्यार में जन्नत से कम नहीं, एक दिलरूबा है दिल में, तो हूरो से कम नहीं। उनके गले से निकले यह शब्द हर प्यार करने वाले की आवाज बन जाते हैं। उनकी गजलों ने जैसे लोगों के अन्दर का खालीपन पहचान कर बड़ी खूबी से उस खालीपन को भर दिया। न किसी की आंख का नूर हूं, न किसी की दिल का करार हूं। जो किसी के काम न आ सके, मैं वो एक मुश्ते.गुबार हूं। कहते.कहते मेहंदी हसन साहब एक बड़ी बात कह जाते हैं.तन्हा.तन्हा मत सोचाकर, मर जावेगा, मर जावेगा, मत सोचाकरण। उनके जाने के बाद हम कह देते हैं कि लो,अब हम नहीं सोचेंगे। पर आपने तो हमे जिन्दगी भर सोचने का सामान दे दिया।

भारत से पाकिस्तान जाने के बाद मेहंदी हसन पूरी दुनिया में अपनी पहचान बना चुके थे। 1978 में मेहंदी हसन जब अपनी भारत यात्रा पर आये तो उस समय गजलों के एक कार्यक्रम के लिए वे सरकारी मेहमान बन कर जयपुर आए थे और उनकी इच्छा पर प्रशासन द्वारा उन्हें उनके पैतृक गांव राजस्थान में झुंझुनू जिले के लूणा ले जाया गया था। कारों का काफिला जब गांव की ओर बढ़ रहा था तो रास्ते में उन्होंने अपनी गाड़ी रूकवा दी। गांव में सडक़ किनारे एक टीले पर छोटा.सा मंदिर बना था, जहां वे रेत में लोटपोट होने लगे ।

उस समय जन्म भूमि से ऐसे मिलन का नजारा देखने वाले भी भाव विभोर हो उठे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे मां की गोद में लिपटकर रो रहे हों। उन्होंने लोगों को बताया कि बचपन में यहां बैठ कर वे भजन गाया करते थे। जिन लोगों ने मेहंदी हसन को नहीं देखा, वे भी उन्हें प्यार और सम्मान करते है। शायद ऐसे ही वक्त के लिए मेंहदी हसन ने यह गजल गाई है.मौहब्बत करने वाले कम न होंगे, तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे।

1993 में मेहंदी हसन एक बार पुनरू अपने गांव लूणा आये मगर इस बार अकेले नहीं बल्कि पूरे परिवार सहित। इसी दौरान उन्होने गांव के स्कूल में बनी अपने दादा इमाम खान व मा अकमजान की मजार की मरम्मत करवायी व पूरे गांव में लड्डू बंटवाये थे। आज मजार बदहाली की स्थिति में वीरान और सन्नाटे से भरी है। यह मजार ही जैसे मेहदी हसन को लूणा बुलाती रहती थी। मानो रेत के धोरों में हवा गुनगुनाने लगती है. भूली बिसरी चंद उम्मीदें, चंद फसाने याद आए, तुम याद आए और तुम्हारे साथ जमाने याद आए। उस वक्त उनके प्रयासों से ही गांव में सडक़ बन पायी थी।

पाकिस्तान जाने के बाद भी मेहंदी हसन ने गायन जारी रखा तथा वे ध्रुपद की बजाय गजल गाने लगे। वे अपने परिवार के पहले गाायक थे जिसने गजल गाना शुरू किया था। 1952 में वे कराची रेडियो स्टेशन से जुडक़र अपने गायन का सिलसिला जारी रखा तथा 1958 में वे पूर्णतया गजल गाने लगे। उस वक्त गजल का विशेष महत्व नहीं था। शायर अहमद फराज की गजल. रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिये आ. से मेहंदी हसन को पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उसके बाद उन्होने कभी पीछे मुडक़र नहीं देखा। इस गजल को मेहंदी हसन ने शास्त्रीय पुट देकर गाया था। मेहंदी हसन ध्रुपद,ख्याल,ठुमरी व दादरा बड़ी खूबी के साथ गाते थे। इसी कारण कोकिला कण्ठ लता मंगेशकर कहा करती हैं कि मेहंदी हसन के गले में तो स्वंय भगवान ही बसते हैं। पत्ता.पत्ता बूटा.बूटा हाल हमारा जाने है जैसी मध्यम सुरों में ठहर.ठहर कर धीमे.धीमे गजल गाने वाले मेहंदी हसन केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देश जैसी राजस्थान की सुप्रसिद्व मांड को भी उतनी ही शिद्दत के साथ गाया है। उनकी राजस्थानी जुबान पर भी उर्दू जुबान जैसी पकड़ थी।

मेहंदी हसन की झुंझुनू यात्राओं के दौरान उनसे जुड़े रहे नरहड़ दरगाह के पूर्व सदर मास्टर सिराजुल हसन फारूकी बताते थे कि मेहंदी हसन साहब की झुंझुनू जिले के नरहड़ स्थित हाजिब शक्करबार शाह की दरगाह में गहरी आस्था थी। वो जब भी भारत आये तो नरहड़ आकर जरूर जियारत करते रहें हैं। वो चाहते थे कि मेहंदी हसन की याद को लूणा गांव में चिरस्थायी बनाये रखने के लिये सरकार द्वारा उनके नाम से लूणा गांव में संगीत अकादमी की स्थापना की जानी चाहिये ताकि आने वाली पीढियां उन्हे याद कर प्रेरणा लेती रहें।

मेहंदी हसन के बारे में मशहूर कब्बाल दिलावर बाबू का कहना है कि यह हमारे लिये बड़े फक्र की बात है कि उन्होने झुंझुनू का नाम पूरी दुनिया में अमर किया। उन्होने गजल को पुनर्जन्म दिया। दुनियां में एसे हजारों लोग है जो उनकी वजह से गजल गायक बने। उन्होने गजल गायकी को एक नया मुकाम दिया। लूणा गांव की हवा में आज भी मेहदी हसन की खुशबू तैरती है। बचपन में मेहंदी हसन को गायन के साथ पहलवानी का भी शौक था। लूणा गांव में मेहंदी हसन अपने साथी नारायण सिंह व अर्जुन लाल जांगिड़ के साथ कुश्ती में दावपेंच आजमाते थे।

वक्त के साथ उनके संगी.साथी भी अब इस दुनिया को छोडक़र जा चुके हैं, लेकिन गांव के दरख्तों, कुओं की मुंडेरों और खेतों में उनकी महक आज भी महसूस की जा सकती है। मेहंदी हसन की मृत्यु होने की खबर सुनकर लूणा सहित पूरे झुंझुनू जिले में में शोक की लहर दौड़ गयी थी। मेहंदी हसन को चाहने वाले खुदा से दुआ करते रहतें हैं कि हसन साहब को जन्नत नसीब हो।

रमेश सर्राफधमोरा
(ये लेखक के अपने विचार है)

नहीं चेते तो मृत हो जायेंगे जल स्त्रोत

मालवा में एक कहावत है कि ष्मालव भूमि गहन गंभीर पग.पग रोटी डग.डग नीर। उक्त कहावत की पग.पग रोटी की बात तो आज भी कायम है, परंतु डग.डग नीर की बात कुछ वर्षों से झूठी साबित होने लगी है। मालवा ही क्यों, बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश में जल संकट ने विकराल रूप धारण कर रखा है। पहले कभी पानी का संकट सिर्फमई.जून में ही दिखाई देता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से जनवरी.फरवरी में हालात गंभीर हो जाते हैं। हम पानी के लिए मुख्यतः वर्षा जल पर ही निर्भर हैं । देश के विभिन्न हिस्सों में असमान वर्षा के कारण कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की स्थिति निर्मित होती रहती है । कई जगह तो पर्याप्त बारिश के बावजूद साल भर जल की उपलब्धता संभव नहीं हो पाती है । इसका कारण यह है कि हम जल संकट के प्रति गंभीर नहीं हैं । जल संरक्षण की कमी तथा निरंतर बढ़ते जल प्रदूषण के कारण स्थिति गंभीर होती जा रही है। मध्यप्रदेश के अनेक बड़े शहरों तथा कस्बों में जल संकट इतना गहरा हो गया है कि यदि स्थिति में सुधार नहीं किया गया तो आगामी चार.पांच वर्षों में इन क्षेत्रों में पेयजल स्त्रोत मृतप्रायः हो जाएंगे । प्रदेश की राजधानी भोपाल सहित सागर, ग्वालियर, इन्दौर, उज्जैन, झाबुआ, राजगढ़ जिलों में पानी की किल्लत और उसे लेकर होने वाले संघर्ष अक्सर अखबारों की सुर्खियाँ बनते हैं। मध्यप्रदेश के लगभग आधे जिलों का भू.जलस्तर तेजी से गिर रहा है । राज्य में फिलहाल 21 जिलों की पचास हजार से अधिक बसाहटों में ग्राउंड वाटर लेवल की हालत गंभीर है । कई जिलों में भू.जल स्तर 500 फिट तक गिर गया है । आने वाले समय में स्थिति और भी बिगड़ सकती है । राष्ट्रीय जल बोर्ड और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफहाइड्रोलॉजी ने चेतावनी दे दी है कि मई माह में ही जल संकट गहरा सकता है। मध्यप्रदेश में जहाँ एक ओर भू.जलस्तर तेजी से नीचे गिर रहा है, वहीं नलजल योजनाएं दम तोड़ रही हैं। प्रदेश में इस समय करीब 4 हजार से अधिक नल.जल योजनायें बंद पड़ी हैं। हालांकि पीएचई विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उनके पास 1.294 योजनाएं ही बंद होने की सूचना है। गौरतलब है कि प्रदेश में 15.639 नलजल योजनाएं हैं । इनमें से हजारों कई साल से बंद पड़ी हैं, वहीं भू.जलस्तर गिरने के कारण कई हजार बंद हो गई हैं। जल संकट से निपटने के लिए हम बड़े पैमाने पर वर्षा जल संरक्षण और भूमिगत जल भंडारों के स्तर को बढ़ाने की पहल कर सकते हैं । कहावत है कि ष्बूंद.बूंद से घड़ा भरता है, अगर हम इस कहावत को आत्मसात कर लें तो पानी की समस्या काफी हद तक हल हो सकती है । हमारे देश में मानसूनी वर्षा जल आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है, परंतु वर्षा के जल का समुचित संग्रहण एवं संचयन न होने के कारण इसका बड़ा हिस्सा बहकर निकल जाता है। दुखद पहलू यह है कि पानी के लिए बेहतर प्रबंध पर कभी ध्यान नहीं दिया जाता । प्रायः यह देखा जाता है कि मार्च.अप्रैल आते.आते पानी की चिंता सताती है, लेकिन गर्मी गुजरने के बाद कभी जल.भंडारण पर ध्यान नहीं दिया जाता । बारिश की कमी भी समस्या की एक बड़ी वजह है । मौसम विभाग के आंकड़े बताते हैं कि बिहार में पिछले 13 वर्षों से औसत बारिश 800 मिली मीटर से थोड़ी अधिक हो रही है, वहीं डेढ़ दशक पहले बिहार में 1200 से 1500 मिमी बारिश होती थी । बारिश में कमी होने से सिंचाई व पेयजल के लिए ग्राउंड वाटर पर निर्भरता बढ़ी है। साथ ही कम बारिश होने से जमीन के अंदर कम पानी जा रहा है। ऐसे में जमीन के नीचे से जितनी मात्रा में पानी निकाला जा रहा हैए उतनी मात्रा में उसकी भरपाई नहीं हो पा रही है। कमोवेश यही स्थिति झारखंड की भी है। कम बारिश तो एक समस्या है ही, जल संरक्षण की कमी इसकी दूसरी बड़ी वजह है । हमने अपने तालाबों को पाट दिया है। महज 20 साल पहले तक बिहार में लगभग ढाई लाख तालाब हुआ करते थे, पर आज इनकी संख्या 93 हजार रह गयी है । शहरों के तालाबों पर भूमाफियाओं की काली नजर पड़ गयी है । एक झटके में डेढ़ लाख से अधिक तालाब काल कवंलित हो गये । उनके स्थान पर इमारतें खड़ी हो गयीं । मध्यप्रदेश के लगभग आधे जिलों का भू.जल स्तर तेजी से गिर रहा है । राज्य में फिलहाल 21 जिलों की पचास हजार से अधिक बसाहटों में ग्राउण्ड वाटर लेवल की हालत गंभीर है। कई जिलों में भू.जल स्तर 500 फीट तक गिर गया है। आने वाले समय में स्थिति और भी बिगड़ सकती है। राष्ट्रीय जल बोर्ड और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफहाइड्रोलॉजी ने चेतावनी दे दी है कि मई माह में ही जल संकट गहरा सकता है। मध्यप्रदेश में जहाँ एक ओर भू.जल स्तर तेजी से नीचे गिर रहा है, वहीं नल.जल योजनाओं का बंद होना चिंताजनक है। इस संबंध में पीएचई विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उनके पास 1,294 योजनायें ही बंद होने की सूचना है । गौरतलब है कि प्रदेश में 15,639 नल.जल योजनायें हैं । इनमें से हजारों कई साल से बन्द पड़ी हैं, वहीं भू.जल स्तर गिरने के कारण कई हजार बंद हो चुकी हैं। पिछले कुछ वर्षों के दौरान हुयी आधी.अधूरी वर्षा ने जल संकट का सामना करने के लि, विवश किया है। चूँकि यह समस्या मानव निर्मित नहीं है, अतः इस संकट की घड़ी में हमें धैर्य एवं समझदारी से काम लेना चाहिए। वर्तमान में वर्षा से प्राप्त जल के उचित वितरण की कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। वर्ष भर लोगों को इस बारे में सचेत नहीं किया जाता है कि पानी की फिजूलखर्ची की उनकी आदत जल समस्या को कितना बढ़ा रही है। इस प्रक्रिया को बदलना होगा। पानी संरक्षण के उपाय और तकनीकी के कड़ाई से पालन करने से समस्या के निराकरण में मदद मिल सकती है। जल समस्या पर शोध तथा अनुसंधान से भी पानी के शुद्धिकरण एवं पुनः उपयोग में वृद्धि की जा सकती है, फलस्वरूप पानी की उपलब्धता स्वयं बढ़ जाएगी। अगर अभी भी हमने जल संरक्षण और उसके समान वितरण के लिए उपाय नहीं किए तो देश के तमाम सूखा प्रभावित राज्यों की हालत और गंभीर हो जाएगी। कुछ काम जैसे, लोगों में जल के महत्व के प्रति जागरूकता पैदा करना, पानी की कम खपत वाली फसलें उगाना, जल संसाधनों का बेहतर नियंत्रण एवं प्रबंधन तथा जल संबंधी राष्ट्रीय कानून बनाना जरूरी है । अगर पानी चाहिए तो इस दिशा में कुछ करना होगा।

निलय श्रीवास्तव
(ये लेखक के अपने विचार है)

राज-काज

बेमन से जिम्मेदारी ठीक नहीं

लोकसभा चुनाव से पहले पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव नतीजों ने जो उत्साह कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के मन में भरा था उसे लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार ने काफूर कर दिया। यही वजह है कि अब वो पार्टी अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते हैं, लेकिन कांग्रेस के अधिकांश दिग्गज नेता नहीं चाहते हैं कि राहुल की जगह कोई और ले। बहरहाल राहुल अपना पद छोड़ने पर अड़े हुए हैं, इसलिए राजनीतिक विश्लेषकों ने भी कहना शुरु कर दिया है कि कोई जिम्मेदारी बेमन से पूरी नहीं की जा सकती है, इसलिए उनकी बात सुनी जानी चाहिए और कोशिश की जानी चाहिए कि कोई वैकल्पिक व्यवस्था तब तक के लिए कर दी जाए, जब तक कि राहुल खुद इस जिम्मेदारी को संभालने की बात नहीं कहते हैं। फिलहाल इस पर भी संशय कायम है कि संसद में पार्टी के नेता वो होंगे या नहीं, क्योंकि 16वीं लोकसभा में इस पद पर मल्लिकार्जुन खड़गे नियुक्त थे, लेकिन वो चुनाव हार गए हैं और इसी कारण यह पद खाली पड़ा है। ऐसे में जबकि 17 जून से संसद का सत्र शुरु होने जा रहा है, जिम्मेदार तो यही कह रहे हैं कि पार्टी नेतृत्व को कोई न कोई फैसला तो लेना ही होगा, लेकिन जो हो पूरे मन से हो तो ही सही है।

संजीवनी साबित होगी बर्खास्तगी

पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा जारी है, जिसे लेकर सियासी जंग भी अपने चरम पर पहुंच चुकी है। ऐसे में खबरें आ रही हैं कि राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी केंद्र से राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकते हैं। इस पर जानकार कह रहे हैं कि यह संभव इसलिए नहीं लगता, क्योंकि ऐसा करने से ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस को एक तरह की संजीवनी मिल जाएगी। राज्य में राष्ट्रपति शासन लगने पर ममता खुद को शहीद बताएंगी और आमजन की सहानुभूति हासिल करने में सफल रहेंगी। बहरहाल यह हकीकत है कि राज्य में सियासी हिंसा चरम पर है और अनेक लोग मारे जा चुके हैं, जिसे लेकर भाजपा तृणमूल पर और तृणमूल भाजपा पर हिंसा की राजनीति करने का आरोप लगा रहे हैं। यहां समझने वाली बात तो यही है कि जान.माल का नुक्सान तो आमजन का ही हो रहा है, जिस पर सियासी रोटियां सेंकने का काम ये दल और नेता करते देखे जा रहे हैं। अब चूंकि आर.पार की लड़ाई तो संभव नहीं इसलिए बीच का रास्ता निकाला जाना चाहिए, ताकि हिंसा भी रुक जाए और इस पर कोई राजनीतिक लाभ भी न लेने पाए।

डिजिटल होती दुनिया महिलाएं रहे जागरूक

आज डिजिटल दुनिया ने वास्तविक दुनिया को मुट्ठी में बंद कर दिया है, जो पहले एक कोरी कल्पना ही थी। डिजिटल दुनिया के सकारात्मक पक्ष को देखे तो यह वर्चुअल दुनिया हमें किसी भी तरह की सूचना, विचार व्यक्तिगत संवाद, वीडियो या ऑडियों शेयर करने का अधिकार देता है, जो हमारे संविधान के भाग-3 में (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता) के अनुच्छेद 19(1) द्वारा हमें संवैधानिक रूप से प्राप्त है।

ब्लाग, वेबसाईट, फेसबुक, ट्विटर, हाइक, इंस्टाग्राम, वाट्सऐप आदि प्रचलित नई सोशल साइटस है, जो डिजिटल दुनिया के वर्चुअल संसार में अपने आपको सक्रिय बनाने का साधन है। इस डिजिटल दुनिया की हमारे जीवन में घुसपैठ इस तीव्र गति से हुई है कि आज लोग वास्तविकात से दूर वर्चुअल दुनिया में ही दोस्तों, रिश्तेदारों से जुड़े हुए है। यह केवल वीडियो पोस्ट और फोटोज व लाइक्स शेयर करने तक सीमित रह गया है। मनोरंजन के साथ-साथ यह महिलाओं को कुछ नया करने व सीखने के लिए मजबूत प्लेटफार्म दे रहा है, यहां महिलाएं बस घर में ही बैठे हुए, अपनी एक उंगली दबाते ही नयी रैसपी, मेकअप, हेयर स्टइल व फीटनेस से संबंधित चैनल द्वारा स्वयं के अस्तित्व को निखार रही है। इसके अलावा यह आर्थिक रूप से भी मजबूत बनने में सहायक सिद्ध हो रहा है। जहां आनलाइन ट्रेडिंग द्वारा कंपनियों के शेयर मार्केट में महिलाएं आज ट्रेडिंग द्वारा इंस्टाग्राम में टूरिस्टर ब्लागर बनकर या फैशन से संबंधित अनेक ब्लाग बनाकर स्वयं को आत्मनिर्भर बना रही है। डिजिटल दुनिया महिलाओं को स्वतंत्रता का एक नया आकाश दे रहा है, जहां वे स्वयं के सारे सपनों को नया आयाम दे रही है। मीटू मूवमेंट यह महिलाओं के अधिकारों व उनके साथ होने वाले शोषण के बारे में समाज में आवाज उठाने का माध्यम बना हुआ है, जिससे महिलाएं जागरूक हो सकें।

जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी तरह इस वर्चुअल दुनिया का एक कटु सत्य या वीभत्स रूप कहना भी गलत नहीं होगा कि इस वर्चुअल दुनिया में कुछ लोग अपनी पहचान छुपाकर महिलाओं का शोषण करते हैं। ऑनलाइन हैरासमेंट भी डोमेस्टिक वायलेंस के व्यापक दायरे का ही एक हिस्सा है। साइबर एव्यूज/आनलाइन एव्यूज ये किसी के साथ भी हो सकता है पर पुरूप के मुकाबले महिलाएं ज्यादा शोषित होती है, भद्दी बातें कहना, अशलील तस्वीरें भेजना, साइबर एव्यूज है। महिलाएं साइबर अपराध के मामलों में शिकायत करने में आज भी पीछे हट जाती है, कारण समाज में अस्तित्व, चरित्रहीनता का अपमान, इन सबके प्रति संवेदनशील होना।

साइबर स्टाकिंग किसी को बार-बार टेक्स मैसेज, फ्रेंड रिक्वेसट भेजना, स्टेटस अपडेट पर नजर रखना , इंटरनेट मॉनिटरिंग इस अपराध की श्रेणी में आते हैं। यह आईपीसी 34क्षक्षके तहत दंडनीय अपराध है। साइबर स्पाइंग में आईटी एक्ट की धारा 66 क्षक्षक के अंतर्गत चैजिंग रूम, लेडीज वॉशरूम, होटल के कमरे और बाथरूम जैसी जगहों पर रिकॉडिंग डिवाइस लगाए जाते हैं, जो महिलाओं के लज्जाभंग स्थिति को जन्म देता है। साइबर पॉनोग्राफी महिलाओं के अश्लील फोटो या वीडियों बना दिये जाते है, सोशल साइट पर सांझा किये गये फोटो या वीडियो को एडिट द्वारा अश्लील बनाकर महिला को न सिर्फ मानसिक रूप से तोड़ देता है, बल्कि उसे शारीरिक व आर्थिक नुकसान भी पहुंचाता है। इस तरह का साइबर अपराध आईटी एक्ट की धारा 67 और 67क्षक्ष के अर्तंगत आते हैं। साइबर बुलिंग, हैरासमेंट का व्यापक रूप है, जहां अपराधी महिला या लड़की से मेट्रिमोनियल साईट या डेटिंग साइट पर दोस्ती कर उनका विश्वास जीत कर नजदीकियां बढ़ाने के बाद निजी फोटो हासिल कर या शादी का प्रलोभन देकर पीड़िता से मनचाहे काम करवाते हैं, आज के युवा वर्ग की महिला स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दूसरे शहरों में नौकरी करती है, अकेलेपन से बचने के लिए आनलाइन साइट पर डेटिंग, चैटिंग करती है, व वर्चुअल दुनिया के मायाजाल में फसकर शोषित होती है, अच्छे दोस्त या सही लाईफ पार्टनर की चाह में शोषण का शिकार हो जाती है।

आनलाइन शॉपिंग पर कुछ लुभावने ऑफर की ओर महिलाएं जल्दी आकर्षित होती है, क्योंकि शॉपिंग हर महिला की कमजोरी है व साइबर झांसे में फसकर अपने ओटीपी वन टाईम पासवर्ड या बैंकिंग ट्रान्सेक्शन डिटेल की साझा कर आसानी से आनलाइन ठगी का शिकार हो जाती है। टेक्नोलाजी के प्रति महिलाओं में जागरूकता कम होती है।

इन विवेचनों से स्पष्ट है कि साइबर क्राइम नए जमाने का डिजिटल युग का नये तरह का अपराध है, जहां जांच एजेंसियां, साइबर सेल व न्यायिक संरचनाएं, मनोवैज्ञानिकी रूप से वेल बीइंग नहीं हो पाते, अवसाद व तनाव का शिकार हो जाते है।

महिलाओं को भी अपने संवेदनशीलता को कमजोरी न बनाकर हथियार बनाना चाहिए, किसी से भी अपनी नीजि फोटो, जानकारी या बैंकिंग से संबंधित डिटेल किसी से शेयर न करे। न किसी वर्चुअल व्यक्ति पर अंधा विश्वास करें। डिजिटल युग में स्वयं को सशक्त बनाये जानकारियों द्वारा न कि शोषण होने का एक माध्यम बन जाए।

जागरूकता, सर्तकता व सुरक्षा ही डिजिटल युग के आभासी मायाजाल से बचने का साधन है, तो सर्तक रहें व सुरक्षित रहे।

हर दुविधा से लड़कर अपने जीवन की **नायिका** बनिए, **शिकार** नहीं ....!!

माधवी
जगदलपुर